CSIR in Media



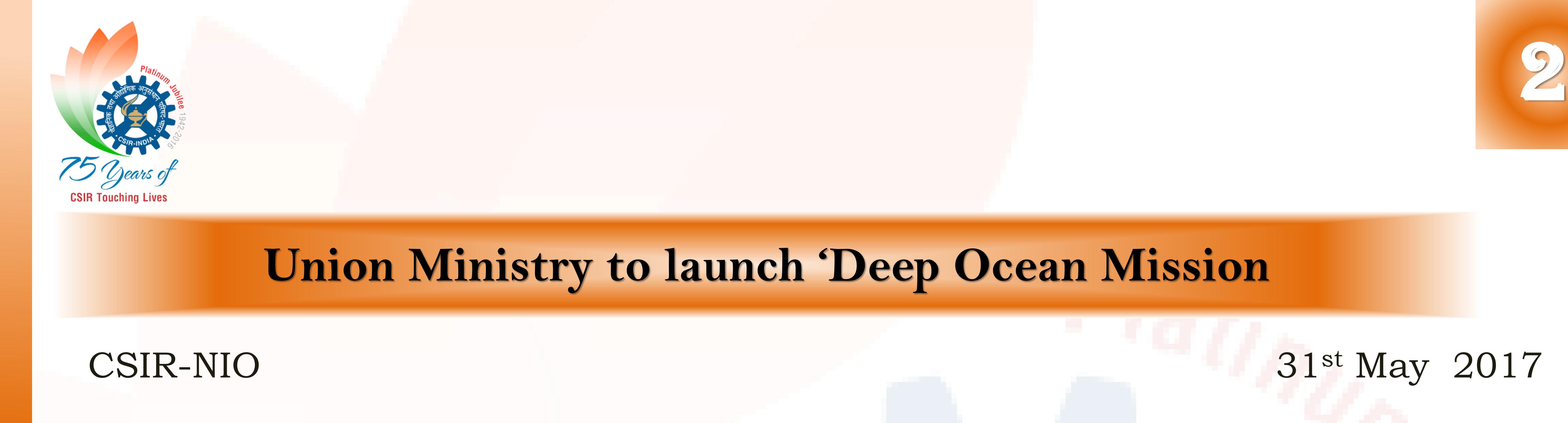


A Daily News Bulletin 1st June 2017





पौद्योगिकी संस्थान की कृषि प्रौद्योगिकी एवं किसानों तक उनकी पहुंच को जानने के लिए पुष्प फसलें जैसे जरबेरा, कैला प्रभावित हुए। एक अन्य वरिष्ठ आईएचबीटी का दौरा किया। संस्थान के निदेशक डा. संजय लिलि, गेंदे, बर्ड ऑफ पैराडाइज सदस्य लोबजंग ने कहा कि वे कुमार ने कहा कि पालमपुर और और गुलाब व उनकी नवीनतम अपने मंत्रालय से इस संस्थान के भूटान की जलवायु एवं भौगोलिक किस्में, तथा औषधीय, सगंध पौधों साथ परस्पर शोध कार्य करने हेत् परिस्थितियां मिलती-जुलती हैं। की खेती एवं फसलोपरांत उनका आग्रह करेंगे। इस दौरे को अत: इस संस्थान द्वारा विकसित प्रबंधन, विशेषकर जैवसक्रिय आयोजित करने वाले इडन उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियां भुटान के यौगिकों के निष्कर्षण किया। वहीं होटिंकल्चर सर्विस के अधिकारी किसानों की आमदनी बढाने हेत् स्टीविया की खेती ने उन्हें बहुत डा. अखिलेश कुमार ने कहा कि आकर्षित किया। प्रतिनिधिमंडल के हर्वल औषध और पुष्पखेती के क्षेत्र कारगार सिद्ध हो सकती हैं। संस्थान के प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान सदस्य उच्च गुणवत्ता युक्त फसलों में इच्छुक लोगों के लिए प्रतिनिधिमंडल ने मशीनों द्वारा चाय को तैयार करने हेतु हाइड्रोपोनिक्स आईएचबीटी अच्छा उद्यमिता केंद्र और एरोपोनिक्स विधि से बहत साबित हो सकता है। वागान प्रबंधन प्रक्रिया, आधुनिक Produced by Unit for Science Dissemination, CSIR, Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi



Panaji: The Union Ministry of Earth Sciences (MoES) is all set to launch 'Deep Ocean Mission' by January 2018, which is expected to improve India's position in ocean research field, M Rajeevan, Secretary, MoES said here on Tuesday. Mr. Rajeevan, who is also chairman of the Polymetallic Nodules Assessment Committee was addressing a workshop on 'Three decades of India acquiring Pioneer Investor Status — Achievements and way forward' at the CSIR-National Institute of Oceanography(NIO). The program on poly metallic nodules was initiated at CSIR-NIO with the collection of the first nodule sample from Arabian Sea on board the first research vessel Gaveshani on January 26,1981. India was the first country in the world to have been given the pioneer

area for exploration of deep-sea mineral, namely, polymetallic nodules in the Central Indian Ocean Basin in 1987.

"This was based on the extensive surveys carried out by the scientists of CSIR-NIO, on several research ships leading to the allocation of an area of 150,000 sq km to the country with exclusive rights under the UN Law of the sea. Subsequently, environment impact assessment (EIA) studies for nodule mining by CSIR-NIO, development of metal extraction process by CSIR-National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur, and CSIR-Institute for Minerals and Metals Technology, Bhubaneswar, and development of mining technology by National Institute of Ocean Technology (NIOT), Chennai, have been taken up under the national program on polymetallic nodules funded by MoES", said NIO Director VSN Murthy. Based on the resource evaluation, India has now retained an area of 75,000 sq km with an estimated resource of about 100 million tons of strategic metals such copper, nickel, cobalt besides manganese and iron.





A FGM (First Generation Mine-site) with an area of 18,000 sq km has been identified. Latest technologies for extraction of metals from the minerals have also been developed.

"We have done EIA. We have done basic experiments on pilot scale since 1997. For economic exploration, the NIOT, Chennai is getting ready with the technology and they may start with mining in next five years," Mr. Murthy told *The Hindu*.

He said that besides identifying the mineral resource and developing technologies for mining and extraction, the programme has also resulted in high impact research as well as manpower development. Detailed environmental data has been collected for compliance with International Seabed Authorities requirements. This is required as the mining activity on large scale should not adversely affect the coast of other countries in the neighbourhood







CSIO, IIT-Ropar sign MoU for advancement in science and technology

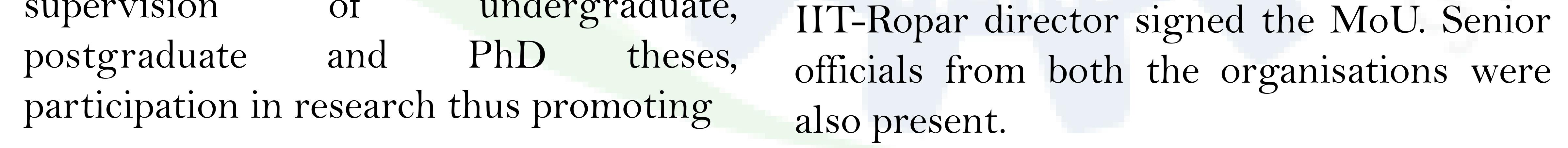




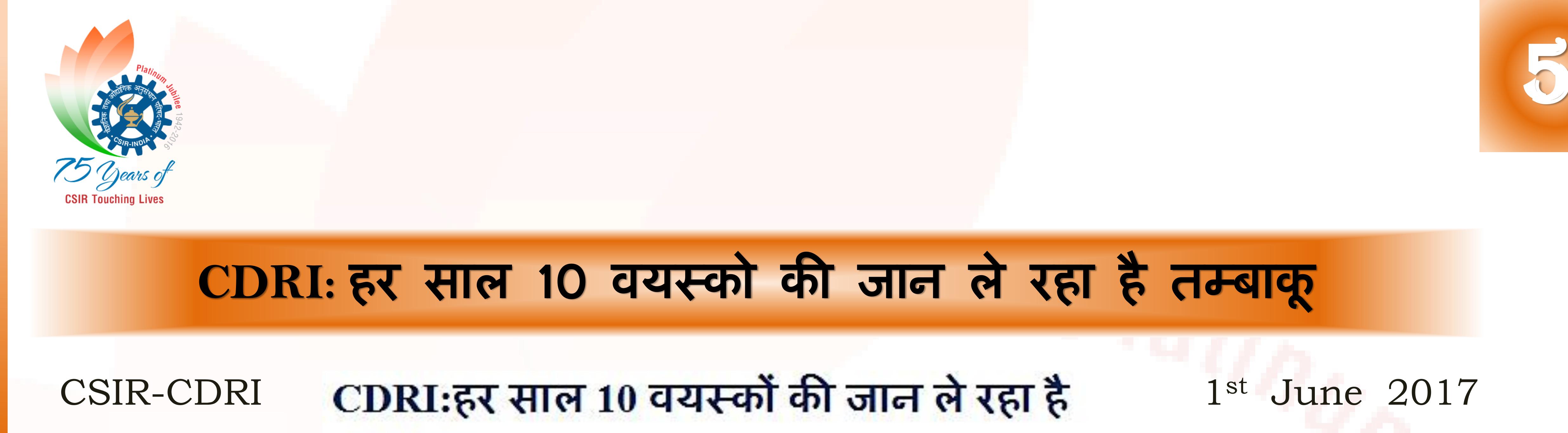


interaction among the scientists, professors and research scholars of both the organisations. Further this will help in pursuing joint research programmes including externally funded schemes and consultancy activities. Scope of MoU also involves sharing of expertise, domain knowledge and available facilities in mutually agreed research areas for research and development. The areas include physics, photonics, optics, chemistry, biomedical, material science and engineering, nanoscience and nanotechnology, electronics, computation, mechanical engineering and any other areas of common interest in science and engineering. R K Sinha, director CSIR-CSIO and Sarit K Das,

The Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) and Indian Institute of Technology Ropar (IIT Ropar) have entered into a Memorandum of Understanding (MoU) for academics and advancement in science and technology. The MoU will facilitate exchange of staff and students towards cosupervision of undergraduate,









Updated: 2017-05-31 18:17:20 IST





सीडीआरआई में विश्व तम्बाकू दिवस के मौके पर केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के सहयोग से लखनऊ.सीडीआरआई में विश्व तम्बाकू दिवस के मौके पर केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के सहयोग से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर जागरूकता और ओरल हेल्थ चेकअप कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस मौके पर सीडीआरआई की निदेशक मधु दीक्षित और मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर ने तम्बाक खाने से होने वाले शारीरिक हानि के बारे

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर जागरूकता और ओरल	में बताया।
देल्थ चेकअप कार्यक्रम का आयोजन हुआ	सीडीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ असीम घटक ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाने की आवश्यकता के बारे में जानकारी दी। उन्होने कहा
व्यक्तिगत स्तर पर भागीदारी के मा	पंत्रण करना सिर्फ सरकार तक ही सीमित नहीं है इसके लिए ध्यम से ही एक तंबाकू मुक्त विश्व की कल्पना की जा सकती है।
	स्वयं तंबाकू का सेवन नहीं करेंगे और अन्य लोगों को भी इनके त करेंगे जिससे वे मुख के कैंसर, उच्च रक्तचाप, हार्ट अटैक एवं ज जर्ने।



Published in:

Patrika.com





समारोह के दौरान सुबह केजीएमयू लखनऊ के डो एसके सोनकर ने तंबाकू एवं स्वास्थ्य विषय पर एक व्याख्यान दिया तथा तंबाकू के उपयोग संबंधी अनेक चौंकाने वाले तथ्य प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा, दुनिया में 15 वर्ष से अधिक आयु के लगभग 21% लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। प्रतिवर्ष दस वयस्कों में से एक की जान तंबाकू के सेवन की वजह से जा रही है। भारत में भी 34% ग्रामीण एवं 28% शहरी पुरुष तंबाकू एवं तंबाकू उत्पादों का सेवन करते हैं। लगभग 7 मिलियन लोग दुनिया भर में प्रति वर्ष तंबाकू सेवन की वजह से असमय मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। ये तंबाकू के विरुद्ध खड़े होने का सही समय है अन्यथा वर्ष 2030 तक दुनिया भर में तंबाकू की वजह से असमय मृत्यु की दर 8 मिलियन प्रतिवर्ष हो जाएगी।

इसके पश्चात, केजीएनयू के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री डिपार्टनेन्ट के डो गौरव निश्ना ने तंबाकू के उपयोग से बचने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा की तंबाकू का सेवन गरीब तबके में अधिक देखा गया है जो उनकी गरीबी का भी एक मुख्य कारण बनता जा रहा है। तंबाकू पर होने वाले खर्च की जगह वो उस धन का उपयोग अच्छे स्वास्थ, अच्छी शिक्षा एवं मूलभूत सुविधाओं पर कर सकते हैं।

सीडीआरआई की निदेशक डो मधु दीक्षित ने सभी वक्ताओं के सारगर्भित व्याख्यानों के लिए बधाई दी एवं डो गौरव मिश्रा को ओरल हेल्थ चेकअप केंप के आयोजन के उनके प्रयासों के लिए भी धन्यवाद दिया।

उन्होंने युवाओं में बढ़ते हुये तंबाकू सेवन के प्रति चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा जैसा की इस वर्ष के विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम है, वास्तव में तंबाकू विकास के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा है, तंबाकू न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य को छीनता है बल्कि वो हमारे पर्यावरण हमारी अर्थव्यवस्था बिगाड़ने के अलावा हमारी ज़िंदगियों से भी बहुत कुछ छीन सकता है।

दोपहर में डो गौरव मिश्रा के नेतृत्व में केजीएमयू के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री डिपार्टमेन्ट के रेजीडेंट डोक्टर्स की टीम ने ओरल हेल्थ चेकअप केंप का आयोजन किया जिसमे 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया। पिछले वर्ष आयोजित केंप के प्रतभागियों का फोलोअप चेक अप भी किया गया।